"महाराणाप्रताप के जीवन पर आधारित नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन"

साहित्य समाज के लिये दर्पण के समान होता है। विशिष्ट रूप से वह साहित्य, जिसकी रचना रूपक-विधा में होती है। ज्यों–ज्यों समाज में नयी–नयी विचारधाराओं का प्रभाव आता है, त्यों–त्यों नये भावों की जागृति होती है। इसी प्रकार नाटक के रूप में भी वैसे ही परिवर्तन होते रहते हैं। "नाटकान्तं कवित्वम्" तथा 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' कहकर विश्व के सम्पूर्ण वाङ्गमय में रूपकों का अद्वितीय महत्त्व स्वीकार किया गया है ।

रूपकों या नाटकों का प्रणयन प्रत्येक भाषा तथा साहित्य में किया जाता रहा है, किन्तु संस्कृत साहित्य में नाट्य-परम्परा का विशिष्ट स्थान है। अवस्था का अनुकरण करनेवाली संस्कृत नाट्य-परम्परा, नाट्यशास्त्र से प्रारम्भ हुई मानी जाती है, जो उत्तरोत्तर अनेकानेक प्रकार से पुष्पित और पल्लवित होती रही है। इसमें प्राचीनतम् नाटककार भास तत्पश्चात् कालिदास, शूद्रक, अश्वघोष, भवभूति, विशाखदत्त, आदि का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है, जो सर्वविदित है। तत्काल से प्रारम्भ होनेवाली यह नाट्य-परम्परा आधुनिककाल तक भी जीवित है। अनेकानेक ऐतिहासिक तथा आधुनिक चरित्रों को तथा तात्कालिक परिस्थितियों को आधार बनाकर भी निरन्तर साहित्य -रचना की जा रही है।

इसमें यदि महाराणाप्रताप के जीवन पर आधारित साहित्य पर विचार किया जाए तो सम्भवतः कोई भी काव्य, महाकाव्य, गीतिकाव्य, नाटक,आदि आधुनिककाल से पूर्व प्राप्त नहीं होता है।

आधुनिककाल पर दृष्टिपात् करने से ज्ञात होता है कि महाराणाप्रताप के जीवन पर आधारित पाँच नाटक प्राप्त होते हैं–

1. प्रतापविजयम्

2. वीरप्रतापनाटकम्

3. मेवाड़प्रतापम्

4. प्रतापशाक्त

5. प्रणवीरप्रताप

वर्तमान में प्रथम तीन नाटक तो उपलब्ध हैं, किन्तु प्रतापशाक्त और प्रणवीरप्रताप ये दो नाटक अब उपलब्ध नहीं हैं ।

Scanned by CamScanner

प्रथम दृष्ट्या नाटकों में नाटककारों द्वारा पात्र, स्थान एवं काल के विषय में विभिन्न मतभेद दृष्टिगत् होते हैं। शोधार्थी द्वारा "महाराणाप्रताप के जीवन पर आधारित नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन" शोधप्रबन्ध हेतु प्रस्तावित है।

शोध-विषय का महत्त्व एवं औचित्य

महाराणाप्रताप के जीवन पर आधारित प्राप्त नाटक स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व बीसवीं शताब्दी के पूर्वभाग में रचित अद्भुत् नाटक हैं । इन नाटकों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

"प्रतापविजयम्" सन् 1928 ई0 में लिखा गया । सन 1931 ई0 में गुजरात से इसका प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ था, जो आज उपलब्ध नहीं है। सन 1979 ई0 में देवभाषा प्रकाशन, दारागंज प्रयाग से पुनः प्रकाशित किया गया । यह संस्करण भी अद्यावधि कठिनता से प्राप्त होता है। मूलशंकर–नाट्यत्रयी (संयोगितास्वयंवरम्, छत्रपतिसाम्राज्यम् और प्रतापविजयम्) सम्पादक–राजेन्द्र नाणावटी, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान , मानित विश्वविद्यालय, नवदेहली से सन् 2010 में प्रकाशित सहज उपलब्ध है। बदरीनाथ जी ने इनके तीनों संस्कृत नाटकों का आंग्लानुवाद भी किया है। जो आज उपलब्ध नहीं है।

"वीरप्रतापनाटकम्" के रचयिता महामहोपाध्याय पण्ड़ित मथुराप्रसाद दीक्षित हैं। यह नाटक सन् 1929 ई0 में लिखा गया । इसका प्रकाशन सन् 1937 ई0 लवपुरीय पंजाब से हुआ । स्वयं नाटककार ने इस पर वैजयन्ती संस्कृत टीका लिखी थी । यह संस्करण सहज उपलब्ध है । स्वयं नाटकार ने इसे पुनः सन् 1931 ई0 में हिन्दी-अनुवाद सहित प्रकाशित किया था, परन्तु यह संस्करण आज उपलब्ध नहीं है।

"मेवाड़प्रतापम्" के प्रणेता श्रीहरिदास सिद्वान्त वागीश हैं। यह नाटक सन् 1924 ई0 में लिखा गया । सन् 1947 ई0 में इसका प्रकाशन प्राच्यवाणी प्रकाशन, कलकत्ता से हुआ था। यह नाटक प्राप्त करना भी कष्टसाध्य है। सन् 1945 ई0 कलकत्ता में इसका प्रथम मञ्चन (अभिनय) किया गया । यह नाटक भी अद्यावधि उपलब्ध है। अतः ये तीनों नाटक शोध हेतु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।

नाटकों में नाटककारों द्वारा पात्र, स्थान एवं काल के विषय में जो विभिन्न मतभेद दृष्टिगत् होते हैं । इस समस्या के पक्ष एंव विपक्ष आदि पर विचार कर सत्यता को ज्ञात करके जिज्ञासुओं कि जिज्ञासा का निराकरण करना शोधार्थी का मुख्य उद्देश्य है। मुख्य उद्देश्य के साथ-साथ हमारे अन्य उद्देश्य इस प्रकार हैं–

Scanned by CamScanner

1. पराधीनता का जीवन कितना कष्टदायक है?

2. इन नाटकों में सम्पूर्ण नाटकीय तत्त्व समाहित हैं या नहीं ?

3. इतिहास में प्राप्त कथा और नाटकों की कथा में अन्तर

4. नारी–चरित्र

5. नाटकों का लोक पर प्रभाव, आदि ।

निष्कर्ष यह है कि "महाराणप्रताप के जीवन पर आधारित नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन" शोधविषय का अभी तक अध्ययन न होने से बाह्य और आन्तरिक साक्ष्यों सहित प्रमाणिकता न पाने से सभी नाटकों की ऐतिहासिक व नाटकीय तात्त्विक विवेचना न होने से और मूलतः संयुक्त रूप से किसी विद्वान् की लेखनी से इसकी समीक्षा न होने से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं और उचित भी है।

शोधकार्यों का सर्वेक्षण –

महाराणाप्रताप के जीवन पर आधारित नाटकों पर पृथक्–पृथक् दृष्टि से शोधकार्य हुए हैं, परन्तु महाराणाप्रताप के जीवन पर आधारित समस्त नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन अद्यावधि पर्यन्त नहीं हुआ है। अतः हमारा शोध विषय मौलिक एंव नवीन है। इन नाटकों में से मेवाड़प्रतापम् पर कोई हिन्दी, अंग्रेजी, अथवा संस्कृत टीका नहीं लिखी गयी है । वीरप्रतापनाटकम् पर ही संस्कृत टीका प्राप्त होती है । जो नाटककार ने स्वयं लिखी है। इसका कोई हिन्दी अथवा आंग्लानुवाद अद्य पर्यन्त नहीं हुआ है । इन नाटकों पर शोध-कार्यों का विवरण निम्नलिखित है–

1. "मथुरा प्रसाद दीक्षित के नाटकः एक अध्ययन"
   शोधकर्त्ता–अनसुयाप्रसाद नैथानी
   हिमांचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला–जून 1981
2. हरिदास सिद्धान्त वागीश के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन
   शोधकर्त्ता – राजेश्वर प्रसाद शर्मा, मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ–1982
3. आधुनिक ऐतिहासिक संस्कृत नाटकः एक सर्वेक्षण तथा मूलशंकर माणिक्यलाल याज्ञिक के ऐतिहासिक संस्कृत नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन
   शोधकर्त्ता – अनन्त प्रकाश श्रीवास्तव
   मेरठ विश्वविद्यालय मेरठ–1992
4. श्रीमथुरा प्रसाद दीक्षित कृत नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन"
   शोधकर्त्री –कुमारी रीना
   महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा) 2010

5- Haridas Sahithya – Haridas Sahithya Kannada Literature

Scanned by CamScanner

Researcher -- C.S Varuni, Jain University – Karnataka – 2014

6. श्रीमथुराप्रसाद दीक्षित के नाटकों में राष्ट्रीय–चेतना
   शोधकर्त्री – उमादत्त
   पंजाब विश्वविद्यालय–2017
7. Studies in the Poetical Works of Mm Haridasa siddhant Vagisa
   Researcher – Reeta Vishwasa
   University of Calcutta – 2016

शोधपत्र–

1. महामहोपाध्याय प0 मथुराप्रसाद दीक्षित विरचित 'वीरप्रताप' नाटक के सौन्दर्यबोधक तत्त्वचों की विवेचना– डॉ0 रीना–
   International Journal of Sanskrit Research Paper– Ananta
   R.S.M Degree College Dhampur (U.P)

शोध विषय का क्षेत्र –

सर्वप्रथम नाट्य-परम्परा का परिचय होगा। तदुपरान्त इतिहास में प्राप्त महाराणाप्रताप से सम्बन्धित तथ्य के अन्तर्गत, जीवनपरिचय, प्रसिद्ध युद्ध, तात्कालीन परिस्थिति और प्रेरक घटनाएँ, आदि पर विचार किया जाएगा। तत्पश्चात् संस्कृत साहित्य में प्रताप के जीवन पर आधारित नाटकों की परम्परा के अन्तर्गत नाटकों का विभाजन होगा। तदनन्तर महाराणाप्रताप के जीवन पर आधारित नाटकों का परिचय सविस्तार होगा। तदुपरान्त महाराणाप्रताप के जीवन पर आधारित नाटकों में भिन्नता पात्रगत,कालगत,स्थानगत एवं घटनागत वर्णन किया जाएगा। तत्पश्चात् ऐतिहासिक आधार पर नाटकों की समीक्षा, इतिहास से समानाता, भिन्नता एवं कवि की मौलिक उद्भावना का वर्णन किया जाएगा। तदुपरान्त नाटकीय तत्त्वों के आधार पर नाटकों की समीक्षा होगी। इसके पश्चात् नाटकों का लोक पर प्रभाव, शठेशाठयं समाचरेत्, देशद्रोही नरेशों के प्रति घृणा एवं निन्दा, प्रताप के जीवन से देशभक्ति, राजभक्ति, एवं मातृभक्ति,आदि की प्रेरणा की चर्चा की जाएगी। अन्त में मूल्यांकन एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाएगा ।

*****

Scanned by CamScanner

शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

"महाराणाप्रताप के जीवन पर आधारित नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन"

भूमिका

प्रथम अध्याय

नाट्य–परम्परा का परिचय

1.1. नाट्य-शब्द की व्युत्पत्ति

1.2. नाटक का लक्षण और विभिन्न मत

1.3 नाट्य का उद्गम एवं विकास

द्वितीय अध्याय

इतिहास में प्राप्त महाराणाप्रताप से सम्बन्धित तथ्य

2.1 जीवन–परिचय

2.2 प्रसिद्ध युद्ध

2.3 जीवन–शैली

2.4 तत्कालीन परिस्थितियाँ–

- 2.4.1 समाजिक परिस्थिति
- 2.4.2 राजनीतिक परिस्थिति
- 2.4.3 धार्मिक परिस्थिति
- 2.4.4 आर्थिक परिस्थिति

Scanned by CamScanner

तृतीय अध्याय

संस्कृत साहित्य में महाराणाप्रताप के जीवन पर आधारित नाटकों की परम्परा

3.1 आधुनिक नाटकों का विभाजन–

3.1.1 ऐतिहासिक नाटक

3.1.2 सामाजिक विषयों पर आधृत नाटक

3.1.3 पुराणों पर आधृत नाटक

3.1.4 आर्षकाव्यों पर आधृत नाटक–

3.1.4.1. रामायण पर आधृत नाटक

3.1.4.2. महाभारत पर आधृत नाटक

3.2 स्वतन्त्रता–पूर्व रचित नाटक

3.3 स्वतन्त्रोत्तर रचित नाटक

चतुर्थ अध्याय

महाराणाप्रताप के जीवन पर आधारित नाटक

4.1 परिचय–

4.1.1 प्रतापविजयम्

4.1.2 वीरप्रतापनाटकम्

4.1.3 मेवाड़प्रतापम्

4.1.4 प्रणवीरप्रताप

4.1.5 प्रतापशाक्त

4.1.6 हल्दी –घाटीवर्णनम्

4.1.7 अन्य सम्बन्धित नाटक

Scanned by CamScanner

पंचम अध्याय

महाराणाप्रताप के जीवन पर आधारित नाटकों में विभिन्नता

5.1 पात्रगत

5.2. कालगत

5.3. स्थानगत

5.4. घटनागत

5.5. नाटकों की समीक्षा

षष्ठ अध्याय

ऐतिहासिक आधार पर नाटकों की समीक्षा

6.1 इतिहास से समानता–

- 6.1.1 पात्रगत
- 6.1.2 कालगत
- 6.1.3 स्थानगत
- 6.1.4 घटनागत

6.2 इतिहास से विभिन्नता–

- 6.2.1 पात्रगत
- 6.2.2 कालगत
- 6.2.3 स्थानगत
- 6.2.4 घटनागत
- 6.2.5 नाटकों में कवि की मौलिक उद्‌भावना

Scanned by CamScanner

सप्तम अध्याय

नाटकीय तत्त्वों के आधार पर नाटकों की समीक्षा

7.1 नाट्य-लक्षण के आधार पर

7.2 कथावस्तु के आधार पर –

7.2.1 नायक के आधार पर

7.2.2 नायिका के आधार पर

7.2.3 प्रतिनायक के आधार पर

7.2.4 अन्य पात्रों के आधार पर – प्रमुख पात्रों के आधार –

7.2.4.1 भामाशाह

7.2.4.2 शक्तिसिंह

7.3 नाट्य-सन्धियों के आधार पर –

7.3.1 मुख

7.3.2 प्रतिमुख

7.3.3 गर्भ

7.3.4 अवमर्श

7.3.5 निर्वहण

7.4 अर्थोपक्षेपक के आधार पर–

7.4.1 विष्कम्भक

7.4.2 प्रवेशक

7.4.3 चूलिका

7.4.4 अंकावतार

7.4.5 अंकमुख

Scanned by CamScanner

7.5 प्रधान रस के आधार पर

7.6 नाट्योक्ति की अपेक्षा कथावस्तु के भेद के आधार पर –

7.6.1 स्वगत

7.6.2 प्रकाश

7.6.3 नियतश्राव्य –

7.6.3.1 अपवारित

7.6.3.2 जनान्तिक

7.6.4 आकाशभाषित

7.7 नाटकीय अंकों के आधार पर

7.8 नान्दी के आधार पर –

7.8.1 अष्टापदा नान्दी

7.8.2 द्वादशपदा नान्दी

7.9 प्रस्तावना के आधार पर –

7.9.1 उद्घात्यक

7.9.2 कथोद्घात

7.9.3 प्रयोगातिशय

7.9.4 प्रवर्तक

7.9.5 अवगलित

7.10 मानव जीवन के सुख–दुःख के चित्रण के आधार पर

Scanned by CamScanner

अष्टम अध्याय

नाटकों का लोक पर प्रभाव

8.1 राष्ट्रीय चेतना की प्रेरणा–

8.2 शठेशाठयं समाचरेत् की प्रेरणा

8.3 देशद्रोही भारतीय नरेशों के प्रति घृणा एवं निन्दा की प्रेरणा

8.4 महाराणाप्रताप के जीवन से प्रेरणा

8.5 देशभक्ति की प्रेरणा

8.6 प्रेरणाएं

- 8.6.1 राजभक्ति
- 8.6.2 गुरूभक्ति
- 8.6.3 मातृभक्ति
- 8.6.4 पितृभक्ति
- 8.6.5 भगवद् भक्ति
- 8.6.6 अन्य प्रेरणा

8.7 मूल्याकंन एवं निष्कर्ष।

*****

Scanned by CamScanner

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

मूल-ग्रन्थ

1. वीरप्रतापनाटक्–प0 मथुराप्रसाददीक्षित ,मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, मुम्बई सन् 1937 ई0 , पुनः प्रकाशित सन् 1965 ई0
2. मेवाड़प्रताप–श्री हरिदास सिद्धान्त वागीश, प्राच्यवाणी प्रकाशन, कलकत्ता सन् 1947 ई0 , पुनः प्रकाशित सन् 1961 ई0
3. प्रतापविजयम्–मूलशंकर माणिकलाल याज्ञिक देवभाषा प्रकाशन दारागज्ज प्रयाग सन् 1931 ई0, पुनः प्रकाशित सन् 1979 ई0
4. अमरमंगलम्–पञ्चाननभट्टाचार्य तर्करत्न, सम्पादक–श्री जीवभट्टाचार्य, तृतीय संस्करण (पता–अप्राप्त) कलकत्ता सन् 1972 ई0
5. प्रतापविजयम् (खण्डकाव्य)–ईशदत्त शास्त्री, देवभाषा प्रकाशन दारागन्ज सन् 1936, पुनः प्रकाशित सन् 1972 ई0
6. प्रतापविजयम् (उपन्यासः) – श्रीकान्त आचार्य, नागप्रकाशन 11ए/यू0पी0 जवाहर नगर दिल्ली सन् 1993 ई0
7. श्रीमत्प्रताप राणायणम् –(महाकाव्य)– परीक्षित शर्मा, 1ए/11 सकाल नगर बनेर रोड़ पुणे सन् 1990 ई0
8. प्रतापविजयम् – श्रीमदीशदत्त शास्त्रिणा श्रीशेन प्रणीत : व्याख्याकार आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी–श्रीधराचार्य चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, संस्कृत विक्रम संवत् 2015 ई0
9. मूलशंकरनाट्यत्रयी – (संयोगितास्वयंवरम्, छत्रपतिसाम्राज्यम्, प्रतापविजयम्) सम्पादकः– राजेन्द्रनाणावटी, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान इन्स्टिट्यूशन एरिया, जनकपुरी, दिल्ली संस्करण सन् 2010 ई0
10. प्रतापचम्पू – हरिदत्त शास्त्री, सम्पादक–प0 दिलीपदत्त उपाध्याय
11. मेवाड़प्रतापम्– हरिदास सिद्धान्त वागीश, सम्पादक श्री हेमचन्द्र भट्टाचार्य,41 देवले न0 एण्टाली कलकत्ता
12. बंगीयप्रताप–हरिदास सिद्धान्त वागीश, सम्पादक–हेमचन्द्र भट्टाचार्य ,41 देवले न0 एण्टाली कलकत्ता
13. श्रीभवेशचन्द्र भट्टाचार्य शर्माकृत-श्री हरिदास सिद्धान्त वागीश का संक्षिप्त जीवन–परिचय, 41 देवले न0 एण्टाली कलकत्ता
14. हेमचन्द्र भट्टाचार्यकृत हरिदास सिद्धान्त वागीश का संक्षिप्त जीवन–परिचय, 41 देवले न0 एण्टाली कलकत्ता
15. A Short Life Sketch of Haridasa Siddhant Vagisa By-Hemchandra Bhattacharya, 41 Devale No Antali Culcutta
16. प्रताप चरित– महावीर प्रसाद जोशी
17. महाराणाप्रतापचरित–डा0 सुभाष तनेजा
18. शिवप्रतापविरूदावली–हजारीलाल शास्त्री
18. अमरसाहस्रम्– भट्टमथुरानाथ शास्त्री

Scanned by CamScanner

19. प्रताप–परिणय (महाकाव्य) –स्वामी हरिराय
20. हल्दी–घाटी वर्णनम्–गंगाघट शास्त्री
21. प्रतापशाक्त–विश्वनाथ केशवछत्रे
22. प्रणवीरप्रताप– गिरधरलाल व्यास
23. महाराणाप्रताप–राजेन्द्र शंकरमट्ट–राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, मानव संसाधन विकास मन्त्रालय,भारत सरकार
24. मथुराप्रसाद दीक्षित के नाटक – अजय मिश्र, प्रकाशन प्रभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली सन् 2002

सहायकग्रन्थ

1. संस्कृत नाटकों में राष्ट्रीय–चेतना –डा0 सुखनन्दन, शुभी प्रकाशन। चित्रावार मऊ चित्रकूट । उ0प्र0
2. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय-भावना –डा0 हरिनारायण दीक्षित, देववाणी परिषद्, दिल्ली
3. विंशतिशताब्धादिकं संस्कृत नाटकम् –प्रो0 रामजी उपाध्याय, सागर म0प्र0 सन् 1986
4. अर्वाचीन संस्कृत सहित्य परिचय– प्रो0 सम्पादक–रमाकान्त शुक्लः देववाणी परिषद्, आर–6 वाणी विहार नई दिल्ली, प्रथम संस्करण सन् 1990
5. आधुनिक संस्कृत नाटकम्– डा0 रामजी उपाध्याय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
6. आधुनिक संस्कृत साहित्यानुशीलनम्– सम्पादक–रामजी उपाध्याय : संस्कृत –परिषद् सागर विश्वविद्यालय सागर, मध्य प्रदेश वि0सं0 –2022
7. संस्कृत साहित्य :– बीसवीं शताब्दी– राधावल्लभ त्रिपाठी, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नवदेहली उ0प्र0

पत्रिकाएँ

1. विश्व संस्कृतम्– वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर, पंजाब सन् 1985
2. अर्वाचीन संस्कृतम्– सम्पादक–डा0 उमाकान्त शुक्ल, देववाणी परिषद दिल्ली सन् 1985 मार्च
3. सागरिका– सागर विश्वविद्यालय सागर, मध्यप्रदेश 1991
4. International Journal of Sanskrit Research – Ananta

सम्पादक–डा0 देवेश कुमार मिश्र –2014

5. दृक – सम्पादक –शिवकुमार मिश्र – इलाहाबाद
6. शोध नवनीत – सम्पादक – डा0 अवधेश प्रतापसिहं – गोण्डा
7. संस्कृत विमर्शः – राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय, नवदेहली
8. सुंसस्कृतम् –सम्पादक –डा0 हरिप्रसाद अधिकारी, वाराणसी
9. संस्कृत रत्नाकरः– रमाकान्त गोस्वामी, नई दिल्ली
10. संस्कृत वर्तमानपत्रम् – प्रफुल्ल पुरोहित, प्रतापगंज वडोदरा

Scanned by CamScanner

11. विश्वस्य वृत्तान्तम् – एस0एन0 संजेलीवाला, सूरत, गुजरात
12. साहित्यामृतम् – डा0 साधना, इस्माइल डिग्री कालिज, मेरठ उ0प्र0

इतिहास से सम्बन्धित ग्रन्थ

1. जेम्स टॉडकृत राजस्थान का पुरातत्तव एवं इतिहास भाग 1–3 सम्पादक – विलियम कूक अनुवादक–ध्रुव भटटाचार्य – राजस्थानी ग्रन्थागार प्रथम माला, सोजती गेट के बाहर, गणेश मन्दिर के पास जोधपुर
2. महाराणाप्रताप महान् जीवनवृत्त और कृतित्व– डा0 देवीलाल पालीवाल, नवभारत प्रकाशन जोधपुर– पांचवाँ संस्करण – 2018
3. वीरशिरोमणि महाराणाप्रताप (सचित्र) – डा0 गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, राजस्थानी ग्रन्थागार
   जोधपुर, दसवाँ संस्करण 2016
4. प्रताप–चरित्र – ठाकुर केसरी सिहं बारहठ
   डिंगल साहित्य शोध संस्थान, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण –2012
5. चेतक (प्रताप का चेतक) – रामसिहं सोलंकी, सम्पादक– मुरली मनोहर जोशी – सज्जन सिहं राणावत, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर 2006
6. हल्दी घाटी का युद्ध और महाराणाप्रताप – डा0 मोहनलाल गुप्ता राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर 2018
7. महाराणाप्रताप एवं सोलहवी शताब्दी का मेवाड़– सज्जन सिहं राणावत के0 एस0 गुप्ता
8. झालामान – नाथूसिहं महियारिया
9. महाराणाप्रताप के प्रमुख सहयोगी का रामशाहतंवर ग्वालियर –डा0 महेन्द्र सिहं खेतासर
10. स्वतन्त्रता के पुजारी महाराणाप्रताप – देवीसिंह मंडावा
11. महाराणाप्रताप, जीवनी, महत्त्व व देन –डा0 रघुवीरसिंह
12. हल्दी घाटी का युद्ध – राजेन्द्र शंकर भट्ट
13. मेवाड़ के महाराणाप्रताप और शहंशाह अकबर– राजेन्द्रशंकर भट्ट
14. मेवाड़ का धार्मिक, साहित्यिक एवं सांस्कृति इतिहास– डा0 देवीदत्त शर्मा
15. मेवाड़ के ऐतिहासिक संस्कृत साहित्य एवं संस्कृति –डा0 प्रदीपसिहं राठौडा
16. राष्ट्ररत्न महाराणाप्रताप – डा0 चन्दशेखर वर्मा

*****

Scanned by CamScanner